Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 6
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

वर्तमान समय में गांधीवादी दर्शन की प्रासंगिकता

राम सुबाष वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान विभाग),पं0 जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, बाँदा।

Article Info
Publication Issue :
November-December-2023
Volume 6, Issue 6
Page Number : 286-289

Article History
Received : 02 Nov 2023
Published : 21 Nov 2023

शोधसारांश – गांधी जी का राष्ट्रवाद किसी राष्ट्र के प्रति हिंसा, प्रतिक्रिया और प्रतिरोध में खड़े होना नहीं है बल्कि यह वसुधैव कुटुम्बकम के मंत्र पर आधारित है। वे संकीर्ण राष्ट्रवाद एवं अन्ध राष्ट्रवाद के विरोधी थे। उन्होंने यंग इण्डिया 04 अप्रैल, 1929 के अंक में लिखा था कि मैं भारतवर्ष का उत्थान इसलिए चाहता हूँ जिससे सम्पूर्ण विश्व का हित हो सके। मैं भारतवर्ष का उत्थान दूसर राष्ट्र के विनाश पर नहीं चाहता हूँ। मैं उस राष्ट्रभक्ति की निन्दा करता हूँ जो दूसरे राष्ट्रों के शोषण एवं मुसीबतो से लाभ उठाने के लिए उत्साहित करती है। गांधी जी की कल्पना का विश्व अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति, सहयोग एवं मित्रता का विश्व था।

मुख्य शब्द– गांधीवादी, हिंसा, प्रतिक्रिया, प्रतिरोध, राष्ट्रभक्ति, शोषण, शान्ति, वैश्विक।

वर्तमान विश्व एक तरफ युद्ध, वैश्विक आतंकवाद एवं धार्मिक कट्टरता से जुड़ी समस्याओं का सामना कर रहा है वहीं दूसरी तरफ उपभोक्ता एवं भौतिकवाद के बढ़ते प्रभाव से मानवीय मूल्यों एवं पर्यावरणीय क्षरण की समस्या का सामना कर रहा है। जनतंत्र में तंत्र का बढ़ता घेरा और उसमें बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार जन को हताश एवं निराश बना रहा है। ऐसे समय गांधीवादी दर्शन ही मानवता की आशा को बरकरार रखता है। **दलाई लामा के अनुसारः–** आज विश्व में शान्ति और युद्ध, आध्यात्म और भौतिकतावाद, लोकतंत्र और अधिनायकवाद के बीच युद्ध चल रहा है, इन बड़े युद्धों से लड़ने के लिए ठीक होगा कि समकालीन समय में गांधीवादी दर्शन को बरकरार रखा जाये।

गांधीवादी दर्शन एक समावेशी दर्शन है, जो गांधी के व्यक्तित्व एवं कृतत्व का प्रक्षेपण है। गांधीवादी दर्शन में हर व्यक्ति, समुदाय एवं राष्ट्र के लिए ही नहीं बल्कि पर्यावरण चिंतन का भी पर्याप्त स्थान है। उनके दर्शन में शिक्षा, विकास, आत्मनिर्भरता एवं प्रकृति में सामंजस्य है। उनका राष्ट्रवाद व्यक्ति एवं परिवार से होता हुआ अन्तर्राष्ट्रवाद की वसुधैव कुटुम्बकम की धारणा पर आधारित है। गांधीवादी दर्शन के चार आधार तत्व हैः–

सत्य एवं अंहिसा :– गांधीवादी दर्शन का आधार सत्य एवं अंहिसा है। गांधी जी के अनुसार सत्य ही ईश्वर है, **मैने कई बार कहा है कि सत्य के अलावा कोई दूसरा ईश्वर नहीं है और ईश्वर के अनुभव एवं प्राप्ति का आधार अंहिसा है।** गांधी जी के अनुसार अहिंसा, मन, वचन, कर्म से हिंसा का त्याग ही नहीं बल्कि प्रेम एवं उदारता की पराकाष्टा है। **गांधी जी की अंहिसा के 5 स्तम्भ है, समझ, स्वीकृति, सम्मान, प्रशंसा एवं करूणा** जो हमारे अस्तित्व की बुनियाद है।

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

गांधीवादी दर्शन में निहित सत्य एवं अंहिसा के इस अर्थ को स्वीकार कर लिया जाये तो धार्मिक कट्टरता और भेदभाव से न केवल मुक्ति मिल सकती है बल्कि ईश्वर की शपथ लेकर असत्य के मार्ग पर चलने वाली गलत राजनीति से भी मुक्ति मिलेगी। हिंसात्मक राजनीति का खात्मा होगा, शस्त्रों का अप्रसार रूकेगा। प्रेम एवं उदारता ही समस्याओं का स्थायी समाधान है, हिंसा नहीं। हिंसा ने वर्तमान में सीरिया, अफगानिस्तान, ईराक, रूस, युक्रेन, फिलिस्तीन को बर्बादी के कगार पर खड़ा कर दिया है लेकिन उनकी समस्या जस की तस है। परमाणु क्षमता से लैस होने के बावजूद रूस और इजराइल अपने विरोधियों के साथ अपनी समस्याओं का समाधान नहीं कर पा रहे है।

सत्याग्रहः– सत्याग्रह गांधीवादी दर्शन का क्रान्तिकारी हथियार है, जो हर तरह के अत्याचार, जुल्म, शोषण के खिलाफ अन्तःकरण की शुद्धता से सत्य का आग्रह है। इसमें खुद कष्ट सहन करते हुए दुश्मन को कष्ट न पहुँचाकर अपनी वाजिब मांग के प्रति निष्क्रिय प्रतिरोध किया जाता है। इससे कठोर दिल व्यक्ति का भी अन्तःकरण अन्ततः सही रास्ते पर आ जाता है। गांधी जी की यह तकनीकी वंचितों के लिए रामवाण है, इसी तकनीकी का प्रयोग करके गांधी जी ने देश को आजाद कराया। मार्टिन लूथर किंग ने अमेरिका में, नेलशन मण्डेला ने अफ्रीका में और आंग सान सू ने म्यांमार में पीड़ितों को अधिकार एवं दमनकारी सत्ता से निजात दिलाया।

सर्वोदय :–सर्वोदय गांधीवादी दर्शन में समाजवाद का विकल्प है। यह सबका सभी तरह से उदय की अवधारणा है। गांधी जी समाज के हासिये पर पड़े व्यक्ति की खुशहाली के लिए सर्वाधिक चिंतित थे। वे चाहते थे कि आजादी के बाद ऐसी व्यवस्था हो जिसमें अन्तिम पायदान पर बैठा व्यक्ति भी मुस्करा सके तथा समाज में कोई गैर बराबरी न हो। देश और दुनिया में जिस तरह असमानता और उसकी वजह से जो वर्ग संघर्ष बढ़ रहा है उसका समाधान गांधी जी के सर्वोदयी दर्शन में ही निहित है। भारत सरकार की सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास की नीति इसी दर्शन पर आधारित है। संयुक्त राष्ट्र संघ की मिलेनियम डेपलेपमेंट तथा उसके बाद सतत् विकास कार्यक्रम की अवधारणा गांधी जी के इसी दर्शन पर आधारित है।

स्वराज :–स्वतंत्रता का आकर्षण पूरी दुनिया में है। फ्रांस एवं अमेरिकी क्रान्ति का नारा स्वतंत्रता ही था, लेकिन गांधी जी स्वराज की अवधारणा स्वतंत्रता से आगे की अवधारणा है। यह केवल विदेशी या दमनगारी शासन से मुक्ति ही नहीं बल्कि स्वशासन की अवधारणा है। इसे रामराज्य भी कहा जाता है अर्थात ऐसा शासन जिससे व्यक्ति अपना शासन स्वयं करें एवं दूसरे के हितो का ख्याल रखे और राज्य की भूमिका न्यूनतम हो।

उपरोक्त आधारों की प्राप्ति के लिए गांधी जी ने विकेन्द्रीकृत राजनीति, समाजवादी अर्थव्यवस्था, कौशल युक्त शिक्षा, ट्रस्टीशिप, महिलाओं की भागीदारी और साधन एवं साध्य की पवित्रता के माध्यम को अपनाते है।

वे विकेन्द्रीकृत राजनीति और समतावादी अर्थव्यवस्था के हिमायती थे। वे ऐसी राजनीतिक व्यवस्था चाहते थे जिसमें ग्राम पंचायते कार्यकारी भूमिका में हो और उससे ऊपर की सरकारें यथा राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार केवल समन्वयकारी एवं मार्गदर्शक भूमिका में हो। वे **''धर्मविहीन राजनीति को फांसी का फंदा मानते थे''** लेकिन उनके लिए **''धर्म कोई मजहब या पंथ नहीं था, बल्कि सत्य का नैतिक अनुशीलन था''**। वे कहा करते थे कि **''राज्य को ऐसा बगिया होना चाहिए था जहां सभी धर्मों के फूल खिल सके''**। राजनीति का सर्वाधिकारी, साम्प्रदायिक, आपराधिक, भ्रष्टाचारी एवं सत्ता लोलुप प्रकृति गांधीवादी दर्शन की उपेक्षा का परिणाम है। राजनीति में सत्यनिष्ठा एवं जन कल्याण का विकास गांधी जी के नैतिक राजनीति से ही संभव है।

गांधी जी विकास के ऐसे मॉडल के विरोधी थे जो शोषण पर आधारित हों। यह शोषण चाहे प्रकृति का हो या समाज के कमजोर तबके का क्योंकि यह दोनों अनैतिक है और अन्ततः यह विनाश की ओर ले

जाता है। वे पश्चिमी विकास मॉडल को पागलपन की अंधी दौड मानते थे। इसलिए वे कहते थे कि अगर हम विनाश से बचना चाहते है तो हमे विकास की दिशा बदलनी होगी।

पश्चिमी देशों के विकास का आदर्श अमेरिका है। अमेरिका का सबसे मुनाफा वाला उद्योग, रक्षा उद्योग है। जब शस्त्रों का निर्माण होगा तो इसकी आपूर्ति एवं खपत की भी रणनीति बनेगी। इसी रणनीति का परिणाम है विश्व में बड़े पैमाने पर हिंसा का बढ़ना। यह हिंसा चाहे आतंकवादी वारदात के रूप में हो या फिर दो समुदायों या राष्ट्रों के मध्य युद्ध। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण बड़े पैमाने पर हथियार का निर्माण है, इस हिंसा का समाधान गांधी जी के अंहिसा की नीति में ही निहित है। **अफ्रीका के गांधीवादी विचारक डेसमंड टूटू का मानना है कि वर्तमान विश्व को गांधीवाद और मानवता के विनाश में से किसी एक का चुनाव करना है।**

आज की अर्थव्यवस्था लालसा, शोषण एवं हिंसा पर आधारित है। यह पहले कभी तृप्त न होने वाली उपभोग की लालसा पैदा करती है और फिर इस लालसा को पूरा करने के लिए प्रकृति एवं कमजोर तबको का शोषण करती है। इसका परिणाम प्राकृतिक एवं सामाजिक असंतुलन एवं उससे उत्पन्न समस्याएं है। इससे मानवता एवं राष्ट्र की अस्मिता ही खतरे में है, इसका समाधान गांधी जी के दर्शन में निहित है।

वे मानते थे कि मनुष्य जहां पैदा होता है वहीं उसकी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति भी होनी चाहिए। लेकिन इन जरूरतों की पूर्ति प्रकृति के सहयोग से मनुष्य की क्षमता और उत्पादन की सृजनशीलता पर आधारित होना चाहिए। वे केन्द्रीकृत उत्पादन प्रणाली के विरोधी थे। वे तकनीकी के विरोधी नहीं थे बल्कि ऐसी तकनीकी जो मनुष्य को बेकार एवं महत्वहीन बनाती है, का विरोध करते थे। भारी तकनीकी एवं पूंजी प्रधान विकास मॉडल से व्यक्तियों का महत्व एवं उसके श्रम में कटौती होती है जो अन्ततः समाज में बेरोजगारी को जन्म देता है। रोजगार विहीन विकास तथा उससे उत्पन्न समस्याओं का समाधान गांधीवादी विकास शैली में ही निहित है।

गांधी जी ने स्वच्छता का जो अभियान चलाया था उसका उद्देश्य केवल परिवेश एवं तन के सफाई तक सीमित नहीं था बल्कि इसके जरिए वे समाज में घनघोर तरीके से फैले हुए छुआछूत के खिलाफ भी व्यापक अभियान छेड़ा था। वे तन एवं घर के साथ–साथ मन एवं समाज की निर्मलता के भी समर्थक थें। वे जाति व्यवस्था को वर्ण व्यवस्था का विकृत रूप मानते थे तथा इसे समाप्त करना चाहते है। वे छुआछूत को हिन्दू समाज के लिए कोढ़ मानते थे। इसलिए उन्होंने सवर्णों को अवर्णों के खिलाफ सदियों से किये गये अन्याय के लिए प्रायश्चित करने की सलाह दी थी।

दूसरी तरफ वर्तमान में हम देखते है कि जाति का खुला खेल हर जगह चल रहा है। आज भी कही–कहीं पर दूल्हे को घोड़ी से जाति देखकर नीचे उतारा जाता है। नौकरी के चयन, ट्रांसफर पोस्टिंग में जातिगत योग्यता भी मायने रखती है, इसलिए जातिय हिंसा एवं तनाव सब तरफ घोषित, अघोषित रूप से बढ़ रहा है।

गांधी जी समाज में महिलाओं की भागीदारी एवं सशक्तिकरण के समर्थक थे। उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी हर मोर्चे पर बढ़ाया। आजादी के आन्दोलन के दौरान शराबबंदी का नेतृत्व गांधी जी ने महिलाओं को ही सौप दिया था। वे मानसिक गुलामी को नरक तुल्य मानते थे तथा इससे महिलाओं को बाहर निकालना चाहते थे। गांधी जी महिलाओं को संरक्षित नहीं स्वरक्षिता बनाना चाहते थे। लेकिन दुःखद स्थिति यह है कि इक्कीसवीं सदी में भी महिलाओं को एक वस्तु समझा जाता है न कि व्यक्ति। इसी वस्तुवादी मानसिकता का परिणाम है कि कठोर कानून के बावजूद भी लैगिंग हिंसा वादस्तूर जारी है। महिलाओं को इस परिस्थिति से बाहर निकालकर उनके सशक्तिकरण एवं सम्यक विकास हेतु गांधीवादी दृष्टि की जरूरत है।

गांधी जी का राष्ट्रवाद किसी राष्ट्र के प्रति हिंसा, प्रतिक्रिया और प्रतिरोध में खड़े होना नहीं है बल्कि यह वसुधैव कुटुम्बकम के मंत्र पर आधारित है। वे संकीर्ण राष्ट्रवाद एवं अन्ध राष्ट्रवाद के विरोधी थे। **उन्होंने यंग इण्डिया 04 अप्रैल, 1929 के अंक में लिखा था कि मै भारतवर्ष का उत्थान इसलिए चाहता हूँ**

जिससे सम्पूर्ण विश्व का हित हो सके। मैं भारतवर्ष का उत्थान दूसर राष्ट्र के विनाश पर नहीं चाहता हूँ मैं उस राष्ट्रभक्ति की निन्दा करता हूँ जो दूसरे राष्ट्रों के शोषण एवं मुसीबतो से लाभ उठाने के लिए उत्साहित करती है। गांधी जी की कल्पना का विश्व अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति, सहयोग एवं मित्रता का विश्व था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Guha, Ram Chandra, Gandhi before India, Penguin India, 2013.
2. Guha, Ram Chandra, Gandhi The Years that change the World 1914-1948, Penguin India, 2018.
3. गांधी, एम0के0, सत्य के साथ प्रयोग.(आत्मकथा)– पेंगुइन बुक्स इण्डिया, 2019
4. हिन्द स्वाराज ज्योति इन्टरप्राइजेज, 2019.
5. वर्मा वी0पी0 आधुनिक भारतीय राजनैतिक चिंतन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
6. ताराचन्द, भारतीय स्वतंत्रा आन्दोलन का इतिहास, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।
7. अवस्थी, आनन्द प्रकाश, भारतीय राजनितिक विचारक, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
8. वर्ड फोकस हिंदी, नई दिल्ली।
9. The Hindu News Paper, New Delhi.